वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

अप्रैल – 2018

* अद्वितीय भगवान की अद्वितीय दिनचर्या – 8
* प्रभावों का महत्व
* मुझ अदना और तुच्छ पर महा उपकार
* मिथ्या विश्वासों का अन्धेर
* घर – ग्राम को सशक्त बनाती महिलाएं
* संगरूर में सत्संग
* विज्ञान में ब्लैकहोल
* शुभ संग्राम

अद्वितीय भगवान की अद्वितीय दिनचर्या – 8

भगवान की अथाह कृतज्ञता

1) भगवान के भीतर बहुत गहरी कृतज्ञता का भाव था। प्रतिदिन की दिनचर्या में उनके जीवन से आश्चर्य्य जनक प्रकाश होता था। सोलन में ठहरने के दिनों में एक सेवक उनके लिए जंगल से कुछ गुलाब के फूल ले आए। गुलाब के फूल साधारण गुलाब के फूलों से अधिक सुन्दर थे। गुरू महाराज ने उस सेवक को फरमाया, "झाड़ी से ज़्यादा फूल मत तोड़ना, यदि तुम तोड़ो तो इस तरीके से तोड़ो कि झाड़ी की सुन्दरता खराब न हो। हमें उस पौधे की कुछ सेवा भी करनी चाहिए।" भगवान का फरमाने का अर्थ था कि उसे पानी आदि देना चाहिए, परन्तु यदि वह किसी चश्मे के निकट है, तो इसकी ज़रूरत नहीं। इस पर भी भगवान सन्तुष्ट नहीं हुए, कि फिर कुछ भी न किया जाए। फिर उन्होंने फरमाया, ठीक है, हम अपने सुबह के साधन में उस झाड़ी के लिए शुभ कामना करेंगे।

2) जब भगवन नन्हें बालिक थे, उनके निवास पर एक बकरी रखी गई, उसकी खूब सेवा होती थी, अधिकतर उसके दूध पर भगवान का पालन पोषण हुआ इस बात ने उनके देव हृदय को हिला दिया। इसको याद करके बहुत से अवसरों पर वह उस बकरी को याद करते और अपनी मंगल कामना में भी प्रतिदिन उसे याद करते थे।

3) मुझे (कनल जी) याद है कि ज़ुबली महोत्सव पर, जब उनके अद्वितीय मिशन में बहुत से जनों ने जीवन भेंट किए, तो उन जनों में से एक माननीय जन को सम्बोधन करके भगवान ने फरमाया, "यहां सरदार जमीयत सिंह जी वर्तमान हैं, जिनकी एक सेवा को मैं कभी नहीं भूल सकता। कुछ वर्ष पहले, मेरे दुश्मनों ने मेरे ऊपर कई दीवानी वा अपराध मूलक मुकदमें दायर कर रखे थे, उनका ईरादा मुझे जेल भेजने का था, क्योंकि मेरे विरूद्ध वारंट जारी हो चुके थे। एक केस में, एक योरपियन बैंक के मैनेजर को मैंने बिनती की कि मेरे अकांऊटस जो उनके बैंक में हैं, उनके आधार पर वह मेरी बेल करवा दें। परन्तु जब मैं फिरोज़पुर पहुँचा, तो मेरे मेहरबान मित्र ने एक और केस में मेरे वारंट जारी कर दिए। उस समय कोई ऐसा जन वहां हाज़िर नहीं था, जो मेरी security देने के लिए आगे आता। उस समय सरदार जमीयत सिंह जी एक दम मेरी security देने के लिए आगे आए और मेरे दुश्मनों की चाल को फेल करके उन्हें निराश कर दिया, जो मुझे हथकड़ियों में देखना चाहते थे।" ऐसा कहते हुए भगवान फूट-2 कर रोने लगे, जिससे वहां उपस्थित जनों के हृदय भी पिघल गए। कुछ चुपचाप आंसू बहाने लगे, परन्तु कई जन फूट फूटकर रोने लगे।

कृतज्ञता का कैसा अनोखा दृष्य!

फरवरी 1916 में भगवान का सक्खर में आख़िरी आना था। बहुत अफसोस और बदकिस्मती कि भगवान का स्वस्थ्य बहुत खराब हो गया, उनके ईलाज के लिए एक हक़ीम आता था। एक दिन भगवान का चैकअप करने के बाद जब हकीम साहिब जाने लगे। पूजनीय भगवान ने अपने गहरे दिल के भावों से, और दिलों को हिला देने वाले शब्दों में उनका धन्यवाद किया, वहीं पर उनके गहरे कृतज्ञता के प्रकाश से मैं फूट फूट कर रोने के लिए बेबस हो गया। और उस कृतज्ञता की महक ने मुझे कृतज्ञता के नये लोक में पहुँचा दिया (कनल जी)।

5) आख़िरी महोत्सव पर भगवान देवात्मा ने बहुत सुन्दर रूमाल में अपने अद्वितीय देव शास्त्र की प्रतियों को लपेट कर उन जनों को भेंट की, जिन्होंने प्रूफ देखे, और सामग्री वा फोटो आदि देने में सहायता की। अपने उन तुच्छ अनुयायियों के प्रति अपनी कृतज्ञता का गहरे भावों से प्रकाश किया, जिन्हें भगवान ने उनके नीच जीवन से बचाकर इस योग्य बनाया था।

ऐसा प्रतीत होता है भगवान देवात्मा की कोई सेवा करके किसी जन के लिए किसी और स्थान पर निवेश करने से यह सबसे उत्तम निवेश है। वह जन सौभाग्यवान हैं, जो भगवान के लिए या उनके कारज के लिए विशेष रूप की सेवा करते हैं, उनका नाम पूजनीय भगवान की यादाश्त में स्थिर हो जाता है, इसके अर्थ के आधार पर उनके सौभाग्य को हम समझ सकते हैं।

(My Bhagwan, What I saw him)
by P.V. Kanal

धर्म जीवन

खण्ड 31 अंक 4
अप्रैल – 2018
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

प्रभावों का महत्व

देव धर्म अद्वितीय धर्म हैं, जिसकी सब शिक्षा नेचर के नियमों पर आधारित है। इसलिए इसको वैज्ञानिक धर्म कहा जाता है। नेचर का एक ठोस नियम है, कि इसके सब पदार्थ, आजीवित वा जीवित सब अपने भीतर प्रति क्षण अपने असर वा प्रभाव छोड़ते हैं। अर्थात आजीवित पदार्थ, पेड़ पौधे, पशु पक्षी और मनुष्य अपने भीतर, हर समय अपने विशेष अति सूक्ष्म प्रभाव छोड़ते रहते हैं। यह प्रभाव या सूक्ष्म अंश धूएं जैसे अदृष्य ही होते हैं। वह भली वा बुरी अवस्था के अनुसार भले या बुरे होते हैं। मनुष्य के आस्तित्व से भले या बुरे अति सूक्षम कण निकल कर उसके चारों और फैलते रहते हैं। जो जो आजीवित वा जीवित पदार्थ या अस्तित्व, उन्हें आकर्षित या ग्रहण कर सकते हैं, वह उनके अन्दर प्रवेश करते रहते हैं। सौगन्ध वा दुर्गन्ध दिखाई नहीं देते, परन्तु अपने भले या बुरे प्रभाव पड़ते रहते हैं। यह अति सूक्ष्म प्रभाव जहां फैले होते हैं, वह हम मनुष्यों के न चाहने पर भी अच्छे वा बुरे अपने चारों तरफ को प्रभावित करते रहते हैं। यह अपनी तीव्रता के अनुसार बहुत ज़ोरदार वा शक्तिशाली होते हैं।

नेचर के भीतर भले या बुरे प्रभावों का विशाल खेल हर समय चारों जगतों में बेजान, वनस्पति, पशु पक्षी और मनुष्यों के भीतर जारी है। मनुश्य जगत में भी बुरे प्रभावों की बड़ी भरमार है। क्योंकि यह सचाई विज्ञान की देन है। और दुनिया के धर्मों का वैज्ञानिक ज्ञान के साथ कोई अधिक लेना देना नहीं। वह कल्पना वा अलहाम आधारित हैं। इसलिए दुनिया का कोई भी धर्म प्रभावों के नियम को आधार बनाकर कोई बात नहीं करता। उनके भीतर प्रभावों का नाम तक नहीं मिलता और न प्रभावों का कोई महत्व दर्शाया जाता है। उनमें जप, तप, पूजा, पाठ, कीर्तन, सिमरण, तीर्थ भ्रमण, दर्शन स्नान, दुआ, नमाज़, रोज़े, मन्त्र, पढ़ने और पढ़ाने, सुनने आदि का महत्व तो है और बहुत बड़ा महत्व है। परन्तु प्रभावों का उच्च या नीच प्रभावों के वर्णन जैसी ओर बहुत आधुनिक बातों की तरह वहां कोई चीज नहीं।

देव धर्म की सारी की सारी शिक्षा, उसकी सत्संग, पूजा, पाठ, धर्म की सारी की सारी प्रणाली, उच्च प्रभावों को या विशेषकर देवात्मा के देव प्रभावों को लेकर है। देव प्रभावों की वचित्र क्षमता और उनके अद्वितीय कारज को लेकर है।

नीच जीवन धारी, पापी, घोर दुराचारी, नशई, भंगेड़ी, कातिल, कसाई, कंजर, महा स्वार्थी, पैसा, पद, प्रभुत्व, मान प्रशंसा, बड़ाई, घोर मिथ्या विश्वासों के

शैदाई जनों की नीच प्रभावों भरी संगत की भीष्णता, प्रबलता और महा घातकता को देव धर्म के अन्दर बार बार दर्शाया जाता है। उक्त नीचताओं के महा भयानक परिणामों को प्रतिदिन घटने वाली सच्ची घटनाओं को दर्शा दर्शा कर आवश्यक रूप से भयभीत होने का पूरा पूरा यत्न किया जाता है। नीच प्रभावों की भयानक हानि और उच्च प्रभावों और देव असरों के लाभ और अनिवार्यता, देव धर्म की शिक्षा और प्रचार के मुख्य धुरे हैं।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा नेचर के विकास क्रम की सर्वोच्च हस्ती हैं। वह अपने आत्मा के भीतर सत्य और शुभ का पूर्ण प्रेम रखते हैं। उनकी झूठ, मिथ्या, वहम, कल्पना को, पाप बुराई को घृणा करते हैं। उनकी उक्त देव शक्तियां सत्य और शुभ का पूर्ण प्रेम और मिथ्या, पाप से पूर्ण घृणा के देव प्रभाव उनकी वचित्र ज्योति और तेज के प्रभाव, उनके देव प्रभावों का कारज महा वचित्र और अद्वितीय है। नेचर ने मनुष्य की अध्यात्मिक जाग्रति, आत्मिक विकास और रक्षा के लिए देवात्मा के लासानी प्रभावों को हवा, पानी और अनाज की तरह आवश्यक रखा है। जो आत्मा के क्षेत्र में देव प्रभाव काम करते हैं और कर सकते हैं, वह काम इस संसार में कोई भी व्यक्ति वा आस्तित्व नहीं कर सकता। देव प्रभाव अधिकारी मनुष्यों का ध्यान उनके अपने जीवनों की ओर फेर देते हैं। मनुष्य अपने प्रकृत रूप के विषयों को सोचने लग जाता है, कि उसके भीतर क्या क्या खराबी है। अपनी बुरी और हानिकारक क्रियाएं बुरी और हानिकारक अनुभव होने लगती है। अपने मिथ्या, झूठे, काल्पनिक विश्वासों को भी हानिकारक देखने लगता हैं। कोई मिथ्या विश्वास, पूजा, पाठ, मिथ्या चिन्ह बुरे वा खराब दिखते हैं और छूट जाते हैं। कोई कोई नीच कर्म, पाप बुराई छूट जाते हैं। अधिकारी मनुष्यों के जीवनों के भीतर देव प्रभाव उच्च परिवर्तन पैदा करते हैं, नीचों को उच्च बनाने का काम करते हैं। कहां मेरी असल भलाई है? कहां मेरी तबाही है? यह सचाई बड़ी से बड़ी योग्यता भी दिखा नहीं सकती। इसकी सही सोझी केवल और केवल देव प्रभाव ही पैदा कर सकते हैं। मनुष्य के भीतर उच्च, सात्विक, परहित सम्बन्धी भावना पैदा करके उसको उच्च और सेवाकारी बना देते हैं। जैसे चील के पेड़ों के झुंड, तपेदिक के रोगी मनुष्यों को तन्दरुस्त बनाने की काफी क्षमता रखते हैं, उसी प्रकार देवरूप से निकले देव प्रभाव - विचत्र रोशनी और तेज संयुक्त लहरें, मनुष्य जीवन में क्रिश्में पैदा करते हैं। जो मानव जीवन के भीतर उच्च परिवर्तन देव जीवन धारी देवात्मा की देव प्रभाव पैदा करते हैं और कर सकते हैं, वह परिवर्तन दुनिया का कोई भी और धार्मिक, उच्च वा महान व्यक्ति पैदा नहीं कर सकता। यह योग्यता केवल और केवल नेचर ने देव प्रभावों की Monopoly रखी है तथा देव प्रभावों के हिस्से रखी है। किसी धर्म की कोई भी पूजा, पाठ, जाप, सिमरण या कोई और धार्मिक क्रिया मनुष्य के दुख, झूठ और पाप का नाश नही कर सकते।

गुरू महाराज ने अपनी एक शुभ कामना के अन्दर इस प्रकार फरमाया है: -

"ऐसा हो, मेरे देव जीवन के देव प्रभाव मेरे आत्मा से निकलकर, तुम में से जिस जिस के हृदय तक पहुँच सकते हों, उस उस के हृदय में प्रवेश करे। वह तुम्हारे हृदयों तक पहुँचकर तुम्हारी योग्यता के

अनुसार, तुम्हारे हृदयों में एक या दूसरे प्रकार का उच्च परिवर्तन पैदा करना मेरा जीवन ब्रत जो ऐसा उच्च परिवर्तन लाने के लिए है, वह पूरा हो। मैं इस समय तुम्हारे आत्माओं में ऐसा उच्च परिवर्तन के लाने के लिए उपस्थित हुआ हूं। मेरा यह शुभ मन्तव्य पूरा हो। तुम्हारे में से जिन जिन के हृदयों में जो जीवन नाशक, जो महा भयानक लहरें निकल रहीं हैं, वह जहां तक नेचर के नियमानुसार सम्भव हो, मेरे देव प्रभावों के द्वारा नष्ट हों, तुम्हारे भीतर उच्च परिवर्तन पैदा हो। आप में से जिस किसी के भीतर नीच गति दायक ज़ोरदार भावों की जो जो दीवारें खड़ी हैं, उन पर मेरे देव प्रभावों की चोटों के द्वारा ऐसे छिद्र पैदा हों कि जिनके भीतर से मेरे वह देव प्रभाव अधिक से अधिक मात्रा में प्रवेश कर सकें। नेचर की जिस विधि ने प्रत्येक कौम और देश में अधिकारी आत्माओं में उच्च परिवर्तन लाने, उन्हें जहां तक सम्भव हो नीच गतियों से मोक्ष देने और उच्च भावों को पैदा करके उच्च जीवन में विकसित करने के लिए देवात्मा को प्रगट किया है, उसका यह महान उद्धेश्य पूरा हो"

एक और स्थान पर इस प्रकार फरमाया है: -

"जिन देव प्रभावों को पाकर मनुष्यात्मा के भीतर उच्च परिवर्तन पैदा हो, न चाहकर भी वह एक या दूसरे प्रकार का उच्च परिवर्तन प्राप्त करता हो, किसी नीच गति से उद्धार प्राप्त करता हो, और किसी नीच गति को ग्रहण करने के योग्य बनता हो, वह देव प्रभाव मनुष्य जगत के भीतर कैसे अद्भुत! और यह देव प्रभाव जिन देव शक्तियों से निकलकर किसी आत्मा तक पहुँचते हों, वह देव शक्तियां कैसी अद्वितीय!! और वह देव शक्तियां जिस आत्मा में विकसित हुई हैं, वह देवात्मा कैसा अलौकिक!!! मेरी यह इच्छा है कि इस समय मेरे देव - आत्मा के द्वारा तुम्हें ऐसे देव प्रभाव प्राप्त हों, क्योंकि मेरे इन देव प्रभावों को पाकर ही कोई आत्मा सत्य धर्म का बोधी और अधिक से अधिक बोधी हो, सकता है, इसके बिना हरगिज़ नहीं।"

"सैंकड़ों (हज़ारों) जनों के न चाहने पर भी देवात्मा के देव प्रभावों के साथ परिवर्तित होकर भिन्न भिन्न प्रकार के महा पापों और अपराधों से उद्धार पाया है। और कितने ही जन जो केवल पूरे स्वार्थ का जीवन जी रहे थे, उनके भीतर पर के सम्बन्ध में सेवाकारी बनने की कम वा अधिक इच्छा जाग्रित हुई है और वह एक या दूसरे प्रकार का भला कारज करने के लिए मजबूर हुए हैं ओर एक वा दूसरे भलाई के कामों में लग गए हैं। बेशक उन्होंने अपने आप अपनी आत्माओं में ऐसा परिवर्तन नहीं चाहा, तो भी वह देवात्मा की देव शक्तियों के द्वारा इस प्रकार से परिवर्तित हो गए।"

देवात्मा के देव प्रभावों, चाहे वह मनुष्य के लिए सब से कीमती पदार्थ हैं, परन्तु उनकी प्राप्ति के नियम हैं, प्रत्येक मनुष्य इनकी प्राप्ति का अधिकारी नहीं हो सकता। आम सेवकों को कुछ अधिकारी होने पर बहुत ही आरम्भिक प्रकार के बहुत थोड़े देव प्रभाव मिलते हैं, जिससे उनके कुछ मिथ्या, झूठे, काल्पनिक, महा हानिकारक विश्वास और मोटे पाप चले जाते हैं। कुछ कुछ किसी के सम्बन्धों में भी बेहतरी आ जाती हैं। कुछ जन कुछ सेवा भी करने लग जाते हैं परन्तु इतने परिवर्तन आने पर भी उनको साधन में देव प्रभाव नहीं मिलते। यहां तक ही आम अच्छे सेवकों का भला हो सकता है और होता है। वह न तो देवरूप को जान

सकते हैं और न अपने रूप को प्रकृत रूप में देखने के योग्य हो सकते हैं। क्योंकि देव प्रभावों तक ठीक रसाई के नियम को वह देख सकते हैं ओर न पूरा कर सकते हैं। उस नियम के बारे में गुरू महाराज ने बारबार रोशनी दी है, परन्तु वह आम मनुष्यों की पहुँच से बाहर रह जाता है। उस ठोस नियम का अनिवार्य महत्व यथेष्ट रोशनी मिले बिन समझ ही नहीं पड़ता।

"अंह अनुराग, अर्थात स्वार्थ, स्वेच्छाचारिता, घमंड और नीच घृणा को रखकर कोई मनुष्य देवात्मा की पूजा करने के योग्य नहीं हो सकता। न कोई इन्सान देवात्मा के साथ सम्बन्ध स्थापन कर सकते हैं। देवात्मा के देव प्रभावों की प्राप्ति के मार्ग में हमारा उक्त अंह अनुराग हिमालय पर्वत की तरह विघ्नकारी बन जाता है। आत्मा के सच्चे भले का कोई क्रम आगे ही नहीं खुलता।

जिस मात्रा में किसी सौभाग्यवान जन का घमंड घटता है, उतना ही वह अधिकारी आत्मा बनता है, उसे देव प्रभाव मिलते हैं।

देवात्मा के देवरूप के भीतर रूहानी रोशनी का जो सूरज निहित है, उसके साथ सम्बन्धित होने या योग करने के समर्थ्य होने के स्तर हैं, जो जिस स्तर की प्राप्ति के योग्य होता या हो जाता है, उस स्तर की रोशनी प्राप्त करके उसके फल को प्राप्त होता जाता है।

साधारण सी कुछ श्रद्धा की पूंजी रखने वाले मनुष्य को जब सभा, संगत से प्रभाव मिलते हैं, तो उसके पाप छूट जाते हैं। फिर मिथ्या विश्वास छूट जाते हैं।

यदि और प्रभाव मिलते हैं, तो मनुष्य के भीतर की किसी सात्विक भाव की पूंजी सतेज होती है या होने लगती है। इससे उसके एक एक सम्बन्ध में बेहतरी और मेल पैदा होने लगता है। विशेषकर माता पिता, बहन भाई और पति पत्नि के सम्बन्ध अश्चर्य्य जनक सुधार और निख़ार आने लगता है।

और प्रभाव मिलने से श्रद्धा बढ़ने से, मनुष्य अधिक संगत करता है, सेवाकारी होता है, गुरू के गुण गाण करके उच्च सुख और तृप्ति पाता है। त्याग करता है, सेवाकारी होता है, दान करता है। साधन करने लगता है या करना चाहता है। एक एक समय बहुत तृप्ति, सुख और खुशी भी अनुभव करता है।

और प्रभाव मिलने से, अपनी कुछ या अपनी एक वा दूसरी कमी, गल्ती वा दोष दिखाई देता है। वह किसी किसी पक्ष में परिशोध भी कर जाता है।

इससे आगे जो कोई सौभाग्यवान जन को रोशनी मिलने पर अधिकारी होने पर नीचता बार बार दिखने लग पड़े और वह अपनी नीचता को प्रतिदिन लिखने का साधन करने लग पड़े तो वह अपने अंह बोध के मार्ग पर पड़ जाता है। नीच अनुराग बाधा न बने तो उसको अंह का बोध हो जाता है। उसको बार बार यह उक्त साधन निर्विघ्न करते रहने के साथ योग्यता अनुसार अंह और अंह जात स्वार्थ, घमंड, घृणा, स्वेच्छा चारिता, मान बड़ाई, प्रशंसा, ईर्षा द्वेष के भावों का बोध होता जाता है और साधन निर्विविघ्न चलते रहने से यह भाव घटते रहते है। अंह की मात्रा घटने से फिर अंह बोध, पाप बोध और फिर परिशोध बोध जागता है और पैदा होता है। तब फिर अपनी सब अंगों के सम्बन्ध में नीचता नज़र आती है और दुखी करती है। तब सौभाग्यवान आत्मा के अन्दर परिशोधों का

Chapter सब पक्षों में, केवल पैसे आदि ही नहीं, सताने, तड़पाने, अपमान करने, हक अपहरण, करने सब अनर्थों के लिए दुख पैदा होने से सच्चे परिशोधों की लड़ी जारी हो जाती।

अंह बोध के गहरे होने के साथ निरंतर प्रभाव मिलने का मार्ग बनता जाता है और खुलता जाता है। नीच गतियों और नीच चिन्ताओं का दुख पैदा होता और बढ़ता है। नीच गतियों से दुख और डर बढ़ने का नाम ही आत्म बोध है।

देव प्रभावों के निरन्तर मिलते रहने से फिर देवरूप के सूरज की झलक पड़ने लगती रहती है। जब देव रूप थोड़ा सा दिखने लगता है। वह मोहक लगता है। झलक देखने से एक मिठास और सरूर मिलता है।

देव प्रभावों के और निरन्तर मिलने रहने से एक तरफ देव रूप के दर्शन होने लग जाते हैं, मनुष्य को उनकी शरण का महा सौभाग्य प्रफुल्लत करने लगता है, दूसरी ओर मनुष्य को अपना मनुष्य रूप, अर्थात नीच सुखों का घृणित, नीच और पिशाच रूप नज़र आने लग पड़ता है। देव प्रभावों के इस स्तर के जारी रहने और बढ़ने से, मनुष्य अपने भीतर के सब नीच अनुरागों से मुक्त होने की तीव्र इच्छा पैदा होती है।

देव प्रभावों को निरन्तर पाकर देव रूप को हृदय में ग्रहण करके, देव शक्तियों की अद्‌भुत महानता बार बार देखकर मनुष्य के भीतर योग्यता अनुसार देव रूप के साथ जोड़ने वाले, अटल विश्वास, श्रद्धा और कृतज्ञता पैदा हाने लगते हैं। अधिकारी होने पर देव प्रभावों वा देवरूप के लिए आकर्षण पैदा होने लगता है।

जिस प्रकार और जिस मात्रा में यह आकर्षण बढ़ता है, उसी मात्रा में मनुष्य का नीच जीवन घटता है ओर मनुष्य सत्य मोक्ष और विकास के मार्ग पर चलते चलते उसका आत्म कल्याण उसकी योग्यता अनुसार होने लगता है।

देव समाज का मूल और मुख्य लक्ष्य और कार्य यही हैं कि देव रूप को अधिक से अधिक निहारने के योग्य होते जाना, उसके साथ जुड़कर देव प्रभावों को पाना, देव प्रभावों की प्राप्ति के साथ अपने प्रकृत रूप को देखना। देव प्रभावों द्वारा अपने सब नीच अनुरागों और नीच घृणाओं से मुक्त होते जाना और योग्यता अनुसार उच्च भाव और सर्वोच्च भाव अपने भीतर विकसित करना। आप बचना और दूसरों को बचाना, आप बनना और दूसरों को बनाना।

सुन्दतम देवरूप के दर्शन करने के योग्य होकर, उसके साथ सम्बन्ध स्थापित करके, देव प्रभावों तक रसाई पाने का जो सर्वोच्च महत्व, देव धर्म में है। इससे महत्वपूर्ण और कोई काम नहीं। इसलिए गुरू महाराज की यह देव बाणी है: -

"देव प्रभावों के लाभ से बढ़कर और कोई लाभ नहीं और देव प्रभावों से वंचित रहने से बढ़कर कोई हानि या दुर्भाग्य नहीं। गुरू महाराज ने भजन के भीतर यह फरमाया है: -

"संग तुम्हारे प्रेम बढ़ाकर, देव प्रभाव तुम्हारे पाऊं,
देव प्रभाव तुम्हारे पाकर जीवन अपना उच्च बनाऊं।
तुमरे उच्च रूप में ढलकर, दिनदिन विकसित होता जाऊं।
जीवन अपना उच्च बनाकर, देव धर्म को मैं फैलाऊं।

(बलदेव सिंह)

उच्च संगत का दान – 3

मुझ अदना और तुच्छ पर महा उपकार

(पिछले अंक से आगे)

एक और भी हस्ती, जो देव समाज के उच्च पदों पर आसीन रही, जिनकी संगत ने मुझ पर बहुत उच्च प्रभाव डाले और मुझे बनाने में उनका बहुत बड़ा योगदान है। वह बहुत ही सन्मान के योग्य श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी थे। वह स्कूल की शिक्षा के अनुसार थे तो लगभग अनपढ़, मुश्किल से हिन्दी, उर्दू, पढ सकते थे, परन्तु थे देवात्मा की अद्वितीय शिक्षा के पंडित। वह केवल शिक्षा के ही बड़े ज्ञानी नहीं थे, बल्कि बहुत कुछ इस ज्ञान पर अमल करके जीने की विशेषता के मालिक थे। उन्हें उच्च शिक्षित न होने, अपने वाक्य वा लेखनी द्वारा, साफ, शुद्ध लिखने वा बोलने में दिक्कत होती थी, इसलिए उनको समझना वा पहचानना, बहुत कम लोगों के भाग्य में था। वह जंगली फूल की तरह बहुत कुछ अपने समय के पढ़े लिखे जनों से छिपे ही रहे और पहचाने बिना ही चले गए। शिक्षा का उनके जीवन में बहुत बड़ा घाटा रहा, नहीं तो वह समाज के सुकरात होने की योग्यता रखते थे। उन्हें बहुत अमीर और बहुमूल्य आत्मिक विरासत मिली थी।

उनकी विरासत में एक बहुमूल्य गुण यह था, वह जो कुछ भी काम करने लगते, उसको पूरा करने में वह अपनी जान तक लगा देते थे। वह एक हल चलाने वाले किसान थे। उनका जन्म शायद 1908 - 09 का था। उन्होंने 28 - 30 वर्ष तक हल चलाया। उन्होंने जोता लगाने, फसल काटने, पानी लगाने, गोडी देने में अपने हाथों से कुतरा करने में, कस्सी चलाने में शायद ही अपने गांव वा अपने इर्द गिर्द के गावों में से किसी को आगे बढ़ने दिया हो। वह अपने शरीर की कोई परवाह नहीं करते थे। भूख प्यास की भी परवाह नहीं करते थे। उन्होंने बहुत संर्घषमय आत्मा पाई थी। ऐसे हल चलाने वाले जाट को देव समाज को समझना और उसकी विज्ञान मूलक शिक्षा को समझना और फिर अपने आप विकासार्थी बनने के लिए मजबूर होना, अश्चर्य्य की बात है। वह हल जोते हुए, बैलों के पीछे हाथ में देव समाज का सप्ताहिक अख़बार हाथ में रखते और जब बैलों को लम्बे खेत को जोतना होता और बैल सीधे चलते रहते, तो वह अख़बार पढ़ने का अवसर निकाल लेते। ऐसे तप के द्वारा उन्होंने गुरू की शिक्षा को पढ़ने, और समझने का संग्राम किया, और देव समाज की फिलासफी का आरम्भिक ज्ञान प्राप्त किया था।

घर में देव समाज की संगत, उनके श्रद्धेय चाचा जी, और बड़े भाई ले आए थे। इस तरफ से वह बड़े सौभाग्यवान थे। परन्तु उनकी एक बड़ी मुश्किल थी, उनके श्रद्धेय पिता जी, श्री सरदार कुण्डा सिंह जी जो कट्टर सिक्ख थे, उनके चारों ओर सिक्खी का ही वातावरण था। पिता ने घर के बिल्कुल सामने बहुत बड़ा सुन्दर गुरूद्वारा बनवाया हुआ था और वह अपने एक भतीजे और विशेष कर बड़े बेटे को पढ़ा लिखाकर अफसर बनाना चाहते

थे, परन्तु जब उन्होंने सिक्ख मत छोड़ दिया और अमृतधारी सिक्ख बनने के स्थान में उनकी नज़र में वह बागी हो गए, तो उनका दिल टुकड़े टुकड़े हो गया, और वह पुत्र को और भतीजे को भला बुरा कह कर अपने दुख का प्रकाश करते रहते। श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी अपने पिता को दुखी नहीं करना चाहते थे, और वह बागी नहीं हो सके। श्रीमान जी की माता जी असमय रोग का शिकार होकर चार पुत्रों को यतीम कर गई। श्रीमान जी को घर के सब काम काज, रसोई आदि समेत सीखने पड़े। श्रीमान जी चूल्हे वा तन्दूर पर रोटियां पका सकते थे। वह सब्जी, दाल बना सकते थे। स्वैटर तक बुन सकते थे। घर भी सम्भालते और हल भी सम्भालते। यह छोटी उमर में दोहरा तप कोई कोई ही कमा सकता है। एक बार मैं हैरानी से भरकर पूछ बैठा कि श्रीमान जी, आपने इतने काम कैसे सीख लिए? उन्होंने उत्तर दिया कि भाई यदि तेरी भी मां बचपन में मर जाती, तो तुम भी यह सब कुछ सीख जाते। श्रीमान जी बालपन से ही कर्तव्यों के बोझ से दब गए। फर्जों की बलि चढ़कर, वह निखरते चले गए।

श्रीमान जी का खेती में कमाया तप, उनकी धर्म की जिन्दगी में बहुत काम आया। वह तीनों धार्मिक क्रियाएं, स्वै - अध्ययन, साधन और सेवा को एक तप जानकर ही करते थे। उन्हें उर्दू, हिन्दी पढ़ना काफी कठिन था। परन्तु जब वह कोई देव शास्त्र पढ़ते या मुझ में देव जीवन का विकास पढ़ते, तब वह एक ही बैठक (sitting) में दिन-रात करके पाठ करते, जैसे कोई नावल को पढ़कर ही उठता है, उसी प्रकार वह धार्मिक ग्रन्थों का एक ही बार में पाठ कर लेते। इस प्रकार एक एक शब्द के अर्थ समझकर (जिसमें उनको बहुत समय लगता) उन्होंने अनगिणत बार मुख्य ग्रन्थों का अखंड पाठ कर शिक्षा का अति कठिन इम्तिहान पास कर लिया। आगे आसानी से विकासलय की सभी श्रेणियां मुझे भी पास करवा दी।

इसी प्रकार वह अपना निज का साधन, लम्बे समय बैठकर, समय आदि की परवाह न करके, लगातार करते। भूख प्यास की भी परवाह नहीं करते थे। ऐसा साधन करते करते वह देव रूप के दर्शन करने तक पहुँच गए थे। जो बहुत पढ़े लिखे और योग्य जनों के लिए यहां तक पहुँचना नसीब में नहीं होता।

इस प्रकार वह सेवा करने का पाक युद्ध लड़ते। इतने ऊँचे पदों पर आसीन किसी और वर्कर ने उस प्रकार का अपने हाथों से सेवा करने का तप, शायद ही कभी किसी ने कमाया हो। जो झाड़ू देने की सफाई की सेवा, पानी छिड़कने की सेवा, पौधों की सेवा, जो बर्तन साफ करने की सेवा में जान मारते, सारा दिन भूखे रहते, और उत्सवों, महोत्सवों पर, जैसे वह जुट जाते, तन, मन तार-तार कर, कई कई दिन लगातार, भूखे प्यासे रहकर, खून पसीना एक करके उनकी प्यासी रूह सेवा के अमृत को पीती, वह फरिश्तों के देखने वाला दृश्य होता था।

पुरानी बात है कि कल्याण मन्दिर की चार दिवारी के लिए कच्ची दीवार निकालने की आवश्यकता थी। श्रीमान जी के साथ मैं भी होता था। श्रीमान जी मई, जून के महीने छोटे से तालाब

पर मुझे साथ ले जाते। वह सारा सारा दिन अकेले छपड़ी (छोटा तालाब) से कच्ची मिट्टी के ढेले खोदकर निकालते रहते और मैं निकम्मा पास बैठा रहता। कुछ दिनों बाद जब वह सांस लेने के लिए कुछ देर रुकते। मैं खाली कस्सी देखकर 3 - 4 ढेले निकालता, मेरे निकम्मे रहने वाले हाथों में छाले पड़ गए।

मैं एक दो दिन रुक गया, फिर छाले ठीक होने पर मैं दो दफा कस्सी चलाकर रुक जाता, फिर श्रीमान जी स्वयं ही कहने लग गए कि यह लो अब तुम कस्सी चलाओ। हफ्ते दस दिन के बाद उन्होंने मुझे कहा कि अच्छे दिहाड़िए जितना काम कर सकता है, वैसे ही मचला हुआ बैठा रहता था। अगले दिन वह दो अच्छी कस्सी ले जाने लग गए। और मैं भी सारा दिन उनके साथ ढेले निकालता रहा। इस प्रकार श्रीमान जी ने कोई 10 - 15 ट्रालियां ढेलों की निकाल दी, जिससे आसानी से मन्दिर की दीवार बन गई। मुझे भी सेवा करते करते कुछ सेवा की ए, बी, सी समझ आई और शरीर ने जो ताकत पकड़ ली वह अलग।

इसी प्रकार एक बार हम दोनों भटिंडा के पुराने मन्दिर के ऊपर के चौबारे में, हमेशा की तरह दुपहिर को सो रहे थे। मई, जून के ही दिन थे। 2 बजे के करीब जागे होंगे। श्रीमान जी कहने लगे, भाई, यदि अब परलोक से गुरूमहाराज आ जाएं, तो पता है हमें क्या कहेंगे? मैंने पूछा क्या? तब उन्होंने कहा कि महाराज ऊंची आवाज़ में ललकारेंगे कि ऐ कम्बख़्तो, दुष्टों, हड्-हरामों, चारपाई तोड़ सरालों की तरह पड़े हो, देवात्मा के सेवक होकर निकम्मे पड़े हो। वह अपने हाथ से शायद बैंत से भी हमें जगाएं या एक लगा भी दें, अपने भारी दुख का गुरू महाराज इस प्रकार इज़हार करते। चल अब कुछ करें। उनके इस ब्यान ने हमें करंट जैसा लगा दिया। पहले तो हमने चौबारे के दरवाज़े वा खिड़कियां साफ की। फिर मैं नलका चलाने लगा और श्रीमान जी ने बाल्टियां उठा उठाकर पहले चौबारा धोया, फिर उसका सेहन, फिर खिड़कियां वा दरवाजे, फिर सारी सीढ़ियां धोई। फिर एक अच्छे खेत जितने मन्दिर का कच्चे सेहन पर पानी का छिड़काव करके उसे साफ और सुन्दर बना दिया। 5 - 6 घण्टे श्रीमान जी ने जो सेवा का अमृत पीया और मुझ नलायक का भी कुछ भला हो गया। क्या कल्याण मन्दिर के और क्या देव समाज की और बिल्डिंगों को बनाने के समय श्रीमान जी मजदूरों से भी अधिक काम करते, ऐसे सुन्दर दृश्य मैंने कई बार देखे है। सफाई के लिए कैसे अपने कीमती वस्त्रों को तुच्छ जानकर प्रयोग में ले आते, उन्हें झाड़ू वा डस्टर की तरह प्रयोग करते तो यह अलग ही नज़ारा होता था।

मैंने तो अपनी सारी उमर में न तो कोई ऐसा पाठक, न ऐसा साधक और न ही अपने आपको न्यौछावर करके सेवा करने वाला, समाज का कौंसलर, कर्मचारी हां कोई सेवक भी नहीं देखा।

वह केवल समाज की सेवा ही इस प्रकार नहीं करते थे, वह बेगानों को भी जब मुसीबत में देखते, बेशक बारिश में किसी की छत टपकती देखते, या कोई कमज़ोर बूढ़ा अपने सिर पर आटा

आदि उठाकर इधर उधर डोलता देखते या किसी परिवार को घर छोड़कर बच्चे बच्चे को, चारपाईयां बिस्तरे और अन्य भारी भरकम सामान उठाते देखते, वह बिना कुछ कहे सुने, आप ही उनका सामान अपने सिर पर रख लेते और बोझ को कम करते, आख़िर में उनको गरीब जानकर जेब में जो कैश वा नोट होता, वह देकर उन्हें प्रणाम करते और सेवा देने के लिए पूरा सिर झुकाकर धन्यवाद देते। हल चलाने वाले जाट होने के नाते किसी किसान की मदद करने के लिए साथ चारा कुतरने लग जाते, या खेतों (पिड़ों में) में अनाज की धूल उड़ाने लग जाते थे, कभी उनके साथ खेतों में पानी देने लग जाते। किसी किसान का पानी का बांध टूटा देखकर झट कस्सी पकड़ कर पानी में घुस जाते। ऐसे सत्युगी पुरुष की संगत और उनकी निकटता और उनके उक्त सेवा के अवसरों को अपनी आंखों देखने का लगभग 20 वर्ष तक सौभाग्य मुझे रहा।

श्रीमान जी पैसे सम्बन्धी तंगी में किसी जन को देखकर, चाहे वह मजदूर हो, चुपचाप अपनी तरफ से रूपयों की सहायता करते रहते थे। एक ज़रूरत-मन्द बच्चे को बी.ऐ., बी.एड, कराने में उन की गुप्त सहायता की, जिसको मैं जानता हूं। जो स्कूलों में अच्छे अध्यापिक रहे।

मेरी अपनी निजी सेवा का भी कोई अन्त नहीं रहा। उन्होंने प्रचार समय पैदल जाते हुए अपने तीन समानों के साथ अकसर मेरा भी समान उठा लेते। मेरे स्नान के लिए स्वंय पानी भर देते। रोटी बनाने के लिए पहले राशन लाते, ईधन का प्रबन्ध करते, फिर बर्तनों का प्रबन्ध करते और खाना बनाते और हम मिलकर खाते। मेरी मालिशें करते, चारपाई, बिस्तरे उठा उठा कर लाते। मन्दिर वा साधन स्थान को साफ करते। क्या सफ़र में और क्या खाना खाने के अनन्तर बहुत हितकर ज्ञान देते। सभाओं और लेखों की अलग सेवा करते।

उनकी सेवा की उनके आगे सिर झुकाने की एक और घटना का उल्लेख अवश्यक महसूस करता हूं। सन 1947 के बाद पाकिस्तान बन जाने पर देव समाज का बहुत कीमती साहित्य वा सामान, रिकार्ड आदि लहौर ही रह गया। साल दो साल बाद या उससे पहले ही देव समाज प्रबन्ध ने एक पार्टी सामान लाने के लिए लहौर भेजी। श्रीमान डाक्टर सोनपार जी, समाज के कर्मचारी वहीं बैठे रहने की जिद करके बैठे थे। समाज के प्रबन्ध ने बड़ी मुश्किल से उन्हें वापिस आने के लिए मनाया था। वह क्योंकि होमिओपैथी के डाक्टर थे, वहां मुफ्त सेवा करते थे। मुसलमान स्त्रियां वा बच्चे उनसे दवाई लेते और ईलाज करवाते। उन्हें सेवाकारी जानकर किसी ने उन्हें कुछ नहीं कहा। पार्टी में महता हरिचन्द जी, उप-कर्मचारी देव समाज की अगवाई में श्रीमान यशवन्त राऊ जी देशमुख और श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी को भेजा। शायद कोई और जन भी हो। महता जी और श्रीमान देशमुख जी हैट पहनकर महता जी की मिन्नी कार में जाते परन्तु श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी को पैदल ही जाना पड़ता। उनको देखकर कई मनचले मुसलमान कुर्बानी का बकरा बोल बोल कर आवाज़े देते। महता जी और देशमुख जी अपनी मर्जी से महत्ता जी का निजी सामान इकट्ठा करते रहते। समाज का सारा

सामान उठाने, पैक करने का काम श्रीमान जी करते। साथियों का खाना बनाने, बर्तन साफ करने का काम श्रीमान जी करते। साथियों की ओर से वा बाहर से बहुत कड़वे व्यवहार मिलते। जान का ख़तरा अलग था। कई दिन लहौर रहकर, अपनी जान को खतरे में डालकर श्रीमान जी ने देव समाज की बहुत बड़ी सेवा की और अपना जन्म सफल किया।

श्रीमान जी को पढ़े लिखे वा सुफेद - पोशों के लिए समझना, इसलिए भी कठिन था, क्योंकि श्रीमान जी की बोल - वाणी ग्रामीण ही थी। और वह मुंह - फट भी थे। मुझे वह सबके समाने काफी खरी खोटी बात मुंह पर ही कह देते। जो बात किसी और का मुझे कहने का हौसला नहीं हुआ। परन्तु मेरा सौभाग्य कि मुझे कभी उनका कहना बुरा नहीं लगा। उस समय मैं अपने जीवन के स्तर अनुसार लाभ उठाने की बेशक उतनी अवस्था में नहीं था। परन्तु मुझे यह कभी महसूस नहीं हुआ कि श्रीमान जी बेमतलब ही कह रहे हैं, यह समझता था कि श्रीमान जी का मेरे सम्बन्ध में कथन ग़ल्त नहीं हो सकता। कुछ और सोझी पाने पर अपने विरुद्ध उनके कथनों से लाभ भी उठाया और सदा उनको धन्यवाद देता रहा। अब भी मेरा हृदय उनके प्रति शुकराने से झुक रहा है। एक तो वह मुझे मेरे घमंडी होने का अकसर एहसास करवाते रहते और कर्मचारियों की सभा में सीधा ही कह देते, "बना फिरता है सैक्रटरी, एडीटर, पर तू घमंड के गड्डे के गड्डे उठाए फिरता है" या "भाई, तू तो बड़ा भारी रोगी हैं।" उनके बड़े भाई श्रद्धेय श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी उनको टोकते, "आप हमारा एक आदमी भगा दोगे," परन्तु वह आगे से यही कहते, "यह कहीं नहीं जाएगा।"

उनकी संगत से सबसे पहले मुझे पता लगा कि मैं महा घमंडी जीव हूं। परन्तु मुझे घमंड का पता कुछ नहीं था। परन्तु यह बात पक्की है कि उनके बिना, यह बात मुझे कभी किसी ने नहीं कह पानी थी। मेरा इस कथन ने बहुत भला किया। मेरी नीचता को दिखाने वाले, मेरी बहूमूल्य सेवा करने वाले वह मेरे विशेष उपकारी थे, उनको बिछड़े चाहे 35 वर्ष हो गए, फिर भी उनकी याद आती है, जब कि अब आत्मिक रहबरी का आकाल पड़ गया है।

दूसरी ओर वह मुझे इतना सन्मान भी देते जिसके मैं बिल्कुल योग्य नहीं था। वह बहुत ही गहरी श्रद्धा के स्वामी थे। जब भी वह उच्च आत्माओं को सत्य देव की जय करते और प्रणाम करते, वह उच्च जनों के उच्च रूप को सन्मुख ला कर देर तक सिर झुकाकर प्रणाम करते, जो शायद न उस समय कोई कर सकता था और न ऐसा प्रणाम करने वाला कहीं हो सकता है। वह देर तक प्रणाम करने की अवस्था में सिर झुकाए खड़े रहते और प्रणाम लेने वाली हस्ती कहीं के कहीं पहुँच जाती। मुझ तुच्छ वजूद को भी वह इसी प्रकार प्रणाम करते। मुंह से कह भी देते कि भाई तू तो 2 - 3 आदमियों का काम करता है, पूर्वजों से अच्छी पूंजी पाई है आदि आदि। वह हमारे घर में हफ्ता हफ्ता ठहरकर प्रचार में सहायक होते। मेरी श्रद्धेय माता जी को भी माता जी कहते और उसी अन्दाज में प्रणाम करते। अकसर यह कह देते कि माता जी महा - पुरुषों की

माताओं की तरह विशेष हैं।

मैं धर्म सम्बन्धियों की कृपा से 1955 - 56 में सोलन संगत में नमक खाना छोड़ दिया, जो 61 वर्ष से अब तक जारी है। उन दिनों विकासालय की रसोई का खाना अति सादा था। रोटी रूखी सूखी ही होती थी। कभी कभी तो नमक के बिना रोटी गले से उतरनी कठिन होती थी। जब श्रीमान जी मेरी मुश्किल को भांप जाते, कमरे से शक्कर आदि लाकर मुझे देते, जिससे मेरी मुश्किल हल हो जाती। यदि मेरा कुर्ता पजामा कोई पसन्द आ जाता, तो उठाकर पहन लेते। एक बार उनके चाचा के बेटे ने अमरीका से उन्हें कैमल कलर का कोट लाकर दिया, वह उठाकर मेरे पास आ गए। कहने लगे, श्रीमान जी यह कोट तुम्हें देना है। मैंने कहा श्रीमान जी, बिना पैसे के मैं यह नहीं ले सकता। मैंने उन्हें उन दिनों सौ रूपया दिया, वह मुझे धन्यवाद देते हुए ले गए। मुझे लगा कि इसकी कीमत ज़्यादा है, यह सोचकर मैं दो बार और सौ सौ रूपये दे दिए, शायद उसके बाद उन्होंने और लेने से इन्कार कर दिया।

वह आम गांवों में सभाएं मुझसे करवाते। अन्दर की सफाई, बिछाई, लोगों को सभा में प्रेरणा करके लाने का काम वह करते। शुरू में वह मेरी भी कभी कभी प्रशंसा करते और मेरे लेखों को अपने पास रखते और लाभ उठाते।

उन्होंने अपने पाठ, विचार के लिए, बीसियों कापिएं उर्दू में लिखकर रखी हुई थी। यह भी, जैसी उनकी तालीम थी, बहुत बड़ा तप था। उनको बार बार पढ़ते और लाभ उठाते। कुछ अब भी मेरे पास हैं और मैं उनसे लाभ उठाता हूं।

ऐसी संगत वा धर्म सम्बन्धी कहां मिलेंगे?

बलदेव सिंह

शेष पृष्ठ 15 का बाकी

के ही एक स्वयं सहायता समूह ने अपने प्रयासों से लगभग तीस वर्षों से बंद पड़े हाट को पुनः शुरू करवाया। आज वहां सौ से अधिक दुकानें सजती हैं जिससे गावं की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है। आज ग्रामीण महिलाएं परिवार को आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाने के साथ साथ गांव में नशाबंदी, शौचालय बनवाने, पशु सखी के रूप में पशु पालने एवं उससे जुड़ी परेशानियां दूर करने, उन्नत खेती के गुर सिखाने तक में अपना योगदान दे रही हैं। स्वरोजगार से जहां महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ा है वहीं वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हुई हैं।

नाबार्ड की एक रिपोर्ट के अनुसार, देश भर में लगभग 75 लाख स्वयं सहायता समूह विभिन्न बैंकों से जुड़े हुए हैं। इनमें से लगभग 48 लाख को बैंकों से सीधे ऋण की सुविधा उपलब्ध है। इनमें से करीब 82 प्रतिशत समूह महिलाओं के हैं। इस तरह घूंघट में छिपे ये चेहरे मां, बेटी, बहन बहू और पत्नी आदि विभिन्न भूमिकाओं में हमारी सांस्कृतिक धरोहर को समेटे भारत की प्रगति की अनोखी दास्तान लिख रहे हैं और अपने सहयोग से न जाने कितनी जिंदगियों की राह आसान बना रहे हैं।

मिथ्या विश्वासों का अन्धेर

हमारे देश में दिन पर दिन मिथ्या विश्वासों का सैलाब आ रहा है। प्रतिदिन हम समाचार पत्रों मे पढ़ते हैं कि तीर्थ स्थानों पर जाने वाले जनों के साथ तरह तरह के हादसे होते हैं। एक एक हादसे में दर्जनों लोग मर जाते हैं। चाहे वह तीर्थ स्थान हिन्दुओं के हों, मुसलमानों के हो, ईसाईयों वा सिक्खों के हों। 15 - 20 वर्ष पहले हमारी एक अध्यापिका के पति रिटायर होकर अमरनाथ यात्रा पर गए वहां ऐसा तुफान आया कि उनके समेत कई जनों की जानें चली गई, लेकिन अफसोस करने वाले उनकी पत्नि को ढारस दे रहे थे कि वह तो सीधे स्वर्ग में जाएंगे जिन्होंने शिवलिंग के दर्शनों के लिए जान कुर्बान कर दी। उनसे कोई पूछे जो जन अपनी पत्नि को विधवा कर गया बच्चों को अनाथ कर गया, वह स्वर्ग में कौन सा सुख भोगेगा। जो देवता अपने भक्तों की रक्षा करने के स्थान पर उनकी जान ले लेता है, उसे परिवार पर भी दया नहीं आती, क्या वह पूज्य है। हज्ज पर गए जनों के साथ जो हादसे हुए हैं, तुफानों से मन्दिर ढह जाते हैं, दर्शन के लिए गए भक्तों की जान चली जाती है, मन्दिरों को लूटकर हमलावर चले जाते हैं, भगवान अपने इज्ज़त भी नहीं बचा पाता तो भक्तों की रक्षा क्या करेगा। परन्तु पंडित, मुल्ला और धार्मिक नेता प्रतिदिन बढ़ चढ़कर अपने ईष्ट देवता के कारनामे बताकर पब्लिक के अन्धे भक्तों को लूट रहे हैं। गरीब जन पेट बांधकर उन्हें दान दक्षिणा देते हैं।

2 दिन पहले ही चण्डीगढ़ सैक्टर 24 के मन्दिर में चोरी हो गई। शिवलिंग से चांदी की परत उतार ले गए चोर। भगवान ने अपनी रक्षा नहीं की पुलीस वहां पर आई और केस दर्ज किया। सी.सी.टी.वी. भी खंगाले जा रहे हैं ताकि चोर किस वाहन पर आए। चांदी खरीदने वालों से भी पूछताछ हो रही है। 2 दिन पहले ही दान पात्र खाली किए गए थे, वह नकदी बच गई। भगवान का काम पुलीस कर रही है।

चण्डीगढ़ बसने से पहले सैक्टर 24 में केलर गांव में शिव जी का मन्दिर था। उसे चण्डीगढ़ बसने के बाद खेमपुरी शिवालय के नाम से जाना जाता है। भक्तों की इस मन्दिर के साथ आस्था जुड़ी हुई है। सोमवार को मन्दिर में आने वाले भक्तों को जब मन्दिर में चोरी का पता लगा तो वह बहुत आहत हुए। इस मन्दिर से चार जज भी जुड़े हुए हैं उनकी इतनी आस्था है कि वह सुबह रो पड़े। प्रात: ही फिर शिवलिंग को सुशोभित किया गया ताकि लोगों की आस्था कायम रहे। भक्तों ने परात के अन्दर रखे शिवलिंग पर ठीक उसी तरह से रूद्राभिषेक और जलाभिषेक किया। अब जब जज लैवल के आदमी इतनी मिथ्या में डूबे हुए हैं, तो आम जनता का क्या कहना?

सुरजीत बराड़

घर – ग्राम को सशक्त बनाती महिलाएं....

'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी' इन पंक्तियों को आज की महिलाओं ने अप्रासंगिक बना दिया है। वे घर संभालने के साथ – साथ सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता के परचम लहरा रही हैं। इसमें ग्रामीण महिलाएं भी पीछे नहीं। वे सीमित संसाधनों और कम शिक्षा के बावजूद संयुक्त परिवार की ज़िम्मेदारी निभाते हुए परिवार की आजीविका को सशक्त बना रही हैं और गांवों में स्वरोजगार का अलख जगा रही हैं। इन्होंने पापड़, अचार, मुरब्बे, दरी व कालीन बनाने जैसी कलाओं एवं बागवानी, गौ पालन, बकरी पालन व मधुमक्खी पालन जैसे व्यवसायों को नए आयाम दिए हैं।

लिज्जत पापड़ को कौन नहीं जानता। मार्च 1959 में जसवंती बेन ने परिवार की आमदनी बढ़ाने के उद्देश्य से छह – सात घरेलू महिलाओं के साथ मिलकर मात्र सौ रुपए की पूंजी के साथ इसे शुरू किया था। आज लिज्ज पापड़ का वार्षिक टर्न ओवर दो सौ करोड़ रुपए है और चालीस हजार से अधिक महिलाएं इसका हिस्सा हैं।

इसी तरह सीकर के गांव बेरी की रहने वाली संतोष चौधरी ने अपने परिवार को आर्थिक तंगी से उबारने के लिए बागवानी के क्षेत्र में कदम रखा। उन्होंने कृषि उद्यान विभाग की मदद से अनार का बगीचा लगाया। अपने इस्तेमाल के लिए उन्होंने जैवक खाद व जैविक कीटनाशक अपने खेत में ही बनाने आरंभ किए। अनार के फलों से उन्हें सालाना 3.5 लाख की आय होती है। और अनार के पौधे तैयार कर वे 6.5 लाख रूपए वार्षिक कमाती हैं।

असम की डालिम चौधरी विभिन्न प्रकार के अचार, मुरब्बे, जैम, जेली इत्यादि का उत्पादन कर परिवार को आर्थिक मज़बूती दे रही हैं। साथ ही गांव की अन्य महिलाओं को इसका प्रशिक्षण भी दे रही हैं।

सीमादेवी झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम के मनोहरपुर प्रखंड के उनधन गांव की रहने वाली हैं। पति की दुर्घटना में मृत्यु ने उन्हें हिलाकर रख दिया। घर में कमाई का कोई साधन नहीं था। ऐसे में उन्होंने स्वयं सहायता समूह से जुड़कर और कर्ज़ लेकर अपना कारोबार शुरू किया। आज कारोबार संभालने के साथ ही वे बेटी को उच्च शिक्षा दिला रही हैं।

हाल ही में पश्चिमी सिंह भूम के फुलवारी गांव में फुलवारी ग्राम संगठन की महिलाओं ने विकास का एक अनुकरणीय अध्याय लिखा। इस गांव तक पहुंचने के लिए कोई कच्ची सड़क तक नहीं थी, जिससे बारिश, बीमारी आदि में गांव से बाहर जाना मुश्किल काम होता था। समूह की महिलाओं ने रोज दो घंटे श्रमदान करके 6 महीने में एक कच्ची सड़क बना दी।

झारखंड के ही खूंटपानी प्रखंड में महिलाओं

शेष पृष्ठ 13 पर

संगरूर में सत्संग
(16 – 17 – 18 फरवरी 2018)

डाक्टर नवजोत जी के ज़ोर देने पर श्रीमान सीता राम जी के जन्म दिन पर तीन दिन का सत्संग रखवा गया। चण्डीगढ़ से श्रीमान बलदेव सिंह जी कल्याण से श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, सिरसा से श्रीमान मेहर सिंह जी कई साथियों समेत पहुँच गए थे।

चण्डगीढ़ से श्रीमान जगदीश जी, अम्बाला से बीबी अशोका जी, श्रीमान ओम प्रकाश जी यमुना नगर, डेरा बस्सी से, बंगे से खुशपाल सिंह जी, कपूरथला से श्रेष्ट कुमार जी, गोनियाना से श्रीमान ज्ञान चन्द जी और सुख देव जी, गंगानगर से प्रिंसीपल पी.सी. दीवान जी, श्री प्यारा सिंह जी, मल्लेका से श्रीमान मेहर सिंह जी, केसूपुरा से श्रीमान जागीर सिंह जी और गुरूदेव राज जी पहुँचे। लोकल सेवक और श्रद्धावान भी सभाओं से लाभ उठाते रहे। 16 - 2 - 2018 रात को आठ बजे सभा रखी गई।

16 – 2 – 2018 रात 8 बजे: – सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। भजन, और अर्चन के बाद सभापति जी ने गुरू महाराज का ध्यान करके आर्शीवाद प्रार्थना की। उसके बाद श्रीमान जी सीता राम जी के जन्मदिन पर सत्संग रखने के लिए डाक्टर नवजोत जी को मुबारकबाद दी। अपने उपकारियों को श्रद्धा और कृतज्ञता से याद करना बहुत मुबारक है। मनुष्य सुख अनुरागी है, उससे ग़ल्तियां होना लाज़मी है। यह संगत योग्य मनुष्यों को उनका असली रूप दिखाती है। परिशोध करने का बल मिलता है, फिर श्रीमान जी ने श्रीमान सीता राम जी के अश्चर्य्य जनक परिवर्तन का ब्यान किया। उनको पाप भरी ज़िन्दगी से निजात मिली। यह सब इस संगत की कृपा है।

सभापति जी ने बताया कि मनुष्य को तीन चीजों की आवश्यकता है, (1) उच्च और विज्ञान मूलक धर्म शिक्षा (2) उच्च भाव (3) देव प्रभाव अपनी नीचताएं बताते हुए, उन्होंने देव प्रभावों द्वारा आए परिवर्तन की बहुत सी घटनाएं बताई।

फिर सभा समाप्त करते हुए कहा कि श्रीमान सीता राम जी अपने जीवन की दौड़ पूरी कर गए हैं और रिले रेस की तरह अपना डंडा (बैंटन) डाक्टर जी को पकड़ा गए हैं। अब संगत रखते रहकर वह और आगे बढ़ें।

17 फरवरी 2018 सुबह सभापति श्रीमान बलदेव सिंह। छवि द्वारा गुरू महाराज का अर्चन, भजन और सहाय प्रार्थना के बाद सभापति जी ने फरमाया कि अन्धेर ग्रस्त लोगों ने ईसा को सूली पर टांग दिया, आज सबसे ज़्यादा उनको पूजा जाता है। मनुष्य सिर से पैर तक नीचता से भरा हुआ है। इस अन्धेरे में वह अपने वातावरण को नहीं देखता, जो उसे हर समय तबदील कर रहा है। एक एक विद्वान जो शराब नहीं पीता था, अमरीका में जाकर शराब पीने लग गया। सदा के लिए अच्छी संगत से कट गया। इन्सान एक नीचता छोड़कर सन्तुष्ट हो जाता है, जबकि हर सम्बन्ध में नीचताओं की भरमार है। मनुष्यात्मा नर्क की जिन्दगी जी रहे हैं। सत्गुरू इस नर्क भरी ज़िन्दगी से निकालते हैं।

17 – 2 – 2018 शाम 4 बजे: – सभापति श्रीमान मेहर सिंह जी। उन्होंने नेचर के विषय में बताया कि उसे चलाने वाला कोई ईश्वर नहीं, बल्कि उसकी अपनी शक्तियां हैं। मनुष्य को उसकी भाव शक्तियां चलाती हैं। स्वार्थ से सम्बन्धों में नर्क पैदा होता है। नेचर में सब पक्षों में विकास हुआ है।

विकसित अस्तित्वों से जुड़कर ही हमारा विकास सम्भव है। विकास के नियम की सबसे बड़ी देन देवात्मा हैं।

फिर श्रीमान जी देव समाज में आने से पहले अपने घोर, शराबी, शिकारी, पापी और नारकीए जीवन का ब्यान किया। बहते आंसुओं से अपने उपकारियों के प्रति की नीचताओं का वर्णन किया और बताया मैंने अपने नीच बृतावों से अपनी पत्नी को सदा के लिए रोगी बना दिया। अब उनकी कुछ न कुछ सेवा करके परिशोध करने की कोशिश करता हूं।

उसके बाद श्रीमान श्रेष्ट सिंह जी ने एक ऐक्सीडैंट में सहायता के लिए अपने उपकारी का सुन्दरभावों से ब्यान किया। और अब उन्हें संगत में लाकर तृप्ति पाई है। बहुत सुन्दर भावों से सारा ब्यान था।

रात 8 बजे सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। उन्होंने बताया कि देव धर्म केवल विश्वास मूलक धर्म नहीं। दुनिया में धर्म के नाम पर पूजा, पाठ, स्नान आदि क्रियाएं होती हैं। इनसे धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं। उच्च भावों से धर्म आता है, मेल और शान्ति बढ़ते हैं। एक पड़ोसी के बुरे व्यवहार पाने पर भी जब उन्होंने विपदा में उनकी सहायता की, तो सम्बन्ध बेहतर हो गया। हमारे उच्च व्यवहार ही लोगों को प्रभावित करते हैं। उन्होंने बताया कि मेरे बुरे व्यवहारों ने मुझे कितना गन्दा सर्टीफिकेट दिया, परन्तु संगत में आने के बाद मेरे व्यवहारों ने मुझे किस क़दर अच्छा सर्टीफिकेट दिया। उनका सारा ब्यान बहुत प्रभावशाली था।

18 – 2 – 2018 ईतवार सुबह :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। अर्चन, देव स्तोत्र, व्याख्या और भजन के बाद, परिवारिक जनों ने श्रीमान सीता राम जी की फोटो को हार पहनाए और सन्मान प्रदर्शन किया। फिर सभापति जी ने सहाय प्रार्थना की। जगदीश जी ने भाव विभोर होकर, "पाऊं मैं धर्म का जीवन, यही हो कामना मेरी" नामक भजन का गान किया।

फिर उन्होंने ज्ञानी जैल सिंह जी की घटना बताई कि कैसे सन्मान भाव के कारण वह ऐसे लोगों से जुड़े, जिनकी कृपा से वह बड़े बड़े पदों पर रहे और भारत के राष्ट्रपति बने। देवात्मा सत्गुरू से जुड़कर जो भला होता है, उसका वर्णन बहुत कठिन है। फिर कोहारवाले गांव में परलोक वासी श्रीमान निर्मल सिंह जी के इस संगत से जुड़ने से माननीय श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी, श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी कर्मचारी बने, और श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी ने बड़े बड़े पापियों को बदला। 14 – 15 वर्ष की उमर में आकर गुरू चरणों में रहकर सेवा के रिकार्ड बनाए। उनके परिवार से बहुत से योग्य सेवक पैदा हुए। अच्छी संगत से जुड़कर अथाह लाभ पहुँचते हैं। फिर सभापति जी ने सीता राम जी ने समाज से जुड़कर कैसे अपनी योग्यताओं का विकास किया, उसका वर्णन किया। देव समाज के कारखाने में बिगड़े इन्सान संवारे जाते हैं। सीता राम जी श्रीमान शादी लाल जी से जुड़े और कुछ के कुछ बन गए। बच्चियों को पढ़ाया, बेटे को डाक्टर बनाया। डाक्टर साहिब बहुत उदारता से संगत पर खर्च करते हैं। यह संगत की कदर करते रहें।

भाव प्रकाश

श्रीमान मेहर सिंह जी: - श्रीमान सीता राम जी कम पढ़े थे परन्तु मुझ से अक्लमन्द थे। मैं अपने बेटे को डाक्टर नहीं बना सका, वह बना गए। डाक्टर साहिब को बेनती करता हूं कि वह अपने पिता से आगे जाएं। सारे परिवार ने बहुत सेवा की है।

श्रीमान ज्ञान चन्द जी गोनियाना: - उठकर श्रीमान जी को झुककर प्रणाम किया और पछतावे के

आंसू बहाते हुए कहा कि श्रीमान जी, सत्संग से बहुत लाभ हुआ है। दुख का प्रकाश करते हुए कहा कि मैं बहुत पीछे रह गया हूं। बहुत दुखी हूं।

श्रीमान सुख देव सिंह जी:- मुझे सत्संग से बहुत लाभ पहुँचा है।

चार बार जय ध्वनि के साथ यह प्रोग्राम सम्पन्न हुआ। 4100 रूपये दान में प्राप्त हुए। जो नवजोत जी को बहुत ज़ोर देकर लंगर के लिए दिए। नवजोत जी, उनके परिवार, उनकी बहनों, बहनोईयों ने बेहद सेवा की।

एक हाजरीन

विज्ञान में ब्लैकहोल

अफसोस कि सबसे बड़े भौतिकविद स्टीफन हॉकिंग नहीं रहे। 76 साल की उम्र में उनका निधन हो गया 21 साल की उम्र में उन्हें असाध्य बीमारी हुई। धीरे-धीरे शरीर के 92% हिस्से ने काम करना बंद कर दिया। डॉक्टरों ने 2 साल की जिंदगी बताई थी, पर अगले 55 साल तक अपना 100% देते रहे। उनकी आंखें और दिमाग ही काम करता था। वे सदी के सबसे तेज दिमाग इंसान थे।

गैलीलियो की 300 वीं पुण्यतिथि पर स्टीफन हॉकिंग का जन्म हुआ। आइंस्टीन के जन्मदिन पर मृत्यु।

कहां करते थे- भगवान नहीं हैं। ब्रह्माण्ड को भगवान ने नहीं बनाया। कैसे बना इसे हमें समझना है।

सितारों की ओर देखो, कदमों की तरफ नहीं। "मृत्यु से डर नहीं लगता, लेकिन उसकी जल्दी भी नहीं है। बहुत से काम करने हैं। जीवन में जिज्ञासु बनें। कदमों की तरफ नहीं, सितारों की और देखकर आगे बढ़ें।"

स्टीफन हॉकिंग

1963 में जब दोनों पैरों ने काम करना बंद कर दिया:- हॉकिंग में एमियोट्रॉफिक लेटेरल स्लेरोसिस बीमारी डिटेक्ट हुई। दोनों पैरों ने काम करना बंद कर दिया। डॉक्टरों ने कहा-2 साल जिंदा रहेंगे। कैमिब्रज में इलाज शुरू हुआ।

उपलब्धि: गुरूत्वाकर्षण पर अपनी पहली रिसर्च पूरी की। बताया कि पृथ्वी से बाहर ग्रैविटीका का क्या असर रहता है।

1980 जब आवाज निकलनी भी बंद हो गई:- धीरे धीरे आवाज बंद होने लगी तो आखों और उंगलियों के इशारे से बात करने लगे। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी की मदद से लाइफ सपोर्ट सिस्टम तैयार कराया। स्पेशल स्पेलिंग कार्ड बनाए गए, जिससे बातें करते थे।

उपलब्धि: बिग-बैंग थ्योरी पर शोध किया। बताया कि धरती कैसे बनी। अभी इसका जो स्वरूप है, वो कैसे निर्धारित हुआ।

1970 दो हाथ बेकार हो गए। बिस्तर से उठना भी असंभव हो गया था।

उपलब्धि: ब्लैकहोल पर रिसर्च कर बताया कि ब्लैक्होल के पास जाने वाली हर चीज उसमें समा जाती है।

1986 जब शरीर का अंदरूनी सिस्टम बिगड़ा। न्यूमोनिया से हालत बिगड़ी। वजन 40 किलो घटा। कंप्यूटर प्रोग्राम के जरिये काम जारी रखा।

उपलब्धि: बताया ब्रह्मांड का कोई आदि-अंत नहीं है। ये भी बताया कि बिग बैंग से पहले की धरती कैसी थी।

1990 जब उंगलियों की हलचल खत्म हुई। मांसपेशियों ने काम करना बंद किया। वजन 30 किलो घटा। स्पीच सिंथेसाइजर के जरिये बातें और अध्ययन जारी रखा।

उपलब्धि: बिग बैंग पर नई रिसर्च। बताया पृथ्वी का आकार घट-बढ़ सकता है।

शुभ संग्राम

मोगा में श्रीमति भरपूर कौर जी के घर 12 जनवरी एक सभा रखी गई, जिसमें उनके कुछ पड़ोसी और सम्बन्धी शामिल हुए। श्रीमान बलबहादर सिंह जी तलवंडी साबो से सभा करवाने के लिए पधारे। इस सभा में परम पूजनीय भगवान की अद्वितीय शिक्षा का वर्णन किया, बताया गया कि देव धर्म दूसरे धर्मों से क्यों भिन्न है। देव समाज के प्रभाव किस प्रकार घरों में स्वर्ग लाते हैं, उसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए। सारा ब्यान बहुत प्रभावित करने वाला था।

सभा के बाद बीबी भरपूर कौर जी ने अपने पहले दुखदाई जीवन और अब जो वह स्वर्ग भोग रही हैं, उसका हृदय गत भावों से वर्णन किया। यह भी बताया कि कैसे उन्होंने एक विवाहित लड़की को 2 बच्चों के साथ घर में रखा और उसके पति से सुलह करवाई। मेरे पति अब मेरा बहुत ख़्याल रखते हैं। हम उजड़ रहे थे, परन्तु इस शरण में आकर कैसे बचे और तरक्की की और अमरीका पहुँच गए।

उसके बाद सबके खाने का प्रबन्ध किया हुआ था और देव धर्म मिशन के लिए 2000 रुपये दान में दिए।

मल्लेका – श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने 16 - 18 जनवरी तक यहां सभाएं करवाई। सभा का विषय था कि मनुष्य के अस्तित्व में सब से कीमती वस्तु उसका आत्मा है। किसी धर्म में आत्मा को मुख्य नहीं बताया, इसलिए बड़े - 2 पदधारी, धार्मिक नेता, राजनैतिक लीडर अन्धकार में जीकर नाना प्रकार के पापों और मिथ्याओं में फंसे हुए हैं। देवात्मा की शरण को पाकर अपनी अपनी योग्यता अनुसार हमारा भला होता है। बड़े बड़े पापी कैसे बदले उनके उदाहरण देकर अपना विषय स्पष्ट किया। श्रद्धा भाव से देव ज्योति और देव तेज की महिमा का वर्णन किया।

17 – 1 – 18 केसूपुरा में प्रिंसीपल सरताज जी के स्कूल के सीनियर कलास के विद्यार्थी, अध्यापक वा और कर्मचारी शामिल थे। सभापति जी ने बताया कि आज्ञा पालन कामयाबी की कुंजी है। कनल जी के उदाहरण से बताया कि उनके लेखक बनने के पीछे श्रद्धा और सन्मान भाव था। भाई लहरा जी इसी भाव से गुरू अंगद देव जी बन गए। श्रद्धावान ही सच्चा ज्ञान वा धर्म प्राप्त कर सकता है। काका जी की अपने पिता प्रति श्रद्धा ने ही उन्हें लेखक बना दिया। इस श्रद्धा भाव से मनुश्य के विकास के कई दृश्य पेश किए।

17 – 1 – 2018 रात 8:30 बजे: - इस सभा में बहुत सारे धर्म सम्बन्धी दूर से भी पहुंच गए थे। नेचर के नियमों के विषय में समझाया गया। विश्व के भीतर जो भी परिवर्तन होता है, वह नेचर के नियमों के अनुसार होता है। धर्म का कारज मनुष्यों में उच्च परिवर्तन लाने का है। देवात्मा द्वारा उच्च परिवर्तन की घटनाएं बताई। मनुष्य का भला वा बुरा भी नियमों पर आधारित है। बहुत सुन्दर वातावरण बना।

18 – 1 – 2018 सुबह 9:30 बजे: - इस सभा में श्रीमान जी ने बताया कि उच्च भावों के बिना कोई धर्म नहीं होता। हमदर्दी का भाव हमें दूसरों के दुख, दर्द का अनुभव करवाता है। हजरत ईसा मसीह, इब्राहिम लिंकन, गांधी जी हमदर्दी की मूर्ति थे। शुक्रगुज़ारी भी बहुत कीमती भाव है, इसके बिना उपकारियों की दुनिया छुपी रहती है। देवात्मा के देव

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

प्रभाव मनुष्यों को हमदर्द वा शुक्रगुज़ार बनाते हैं। पति, पत्नि, बच्चे, मरीज़ों को इन प्रभावों ने शुक्रगुज़ार बनाकर उनके व्यवहार बदले हैं। बहुत से उदाहरणों द्वारा सभापति जी ने अपने विषय को स्पष्ट किया।

गंगानगर – खुशी की बात है कि गंगानगर में देव धर्म की शिक्षा फैलाने के लिए धर्म सम्बन्धियों ने काम शुरू किया है। पदमपुर में डाक्टर मुन्शा सिंह जी प्रतिदिन शाम सुबह सभा करवाते हैं। विजिट करते हैं उनके संग्राम से ही गंगानगर में भी साधन स्थान बनाया हुआ है। वहां सब साथी सेवक हफ्ते में एक बार सभा करते हैं। गंगानगर में गोपाल जी और प्रिंसीपल दीवान जी साधन स्थान पर मिलकर सभा करते हैं।

प्रिंसीपल दीवान जी, गोपाल जी 21 – 1 – 2018 को करनपुर पहुँचे, वहां हर भजन जी के घर जाकर उन्हें जीवन के लक्ष्य के विषय में बताया उनसे हितकर बातचीत की, जिसमें उनके परिवारिक जन भी शामिल हुए। उन्होंने मन्त्री साहिब की सभाऐं सुनने की इच्छा ज़ाहिर की।

28 – 1 – 2018 को गज सिंह पुरा में सभा की गई। जिसमें कई धर्म सम्बन्धी पहुँच गए थे। उपस्थित जनों ने काफी लाभ उठाया।

4 – 12 – 2018 को फिर करणपुर में सभा रखी गई। यहां भी हमें एक हैडमास्टर साहिब ने हरभजन सिंह जी के घर पहुँचा दिया। उनका हृदय बहुत प्रभावित है, वह फोन पर बातचीत करते रहते हैं।

11 – 2 – 2018 को फिर गज सिंह पुरा में सभा रखी। वहां भी देव धर्म की शिक्षा के विषय में बहुत बातचीत हुई। भविष्य में मिलते रहने का विश्वास दिलवाया। पदमपुर से डाक्टर साहिब और हेमन्त कुमार जी भी पहुँच गए थे। यहां बहुत अच्छा वातावरण बना। अगली सभा 11/3 को फिर कनकपुर में रखी गई।

साधन स्थान पर प्रतिदिन 5:30 से 7 बजे सभा होती है, जिसमें बहुत से धर्म सम्बन्धी आते हैं।

गोपाल जी लिखते हैं: – (प्रिंसीपल दिवान जी के साथ गोपाल जी भी शामिल रहते हैं) प्रिंसीपल साहिब 83 वर्ष की उमर नौजवानों की तरह उत्साह से भरे रहते हैं। उनमें दीनता, सहनशीलता दिन पर प्रति दिन बढ़ रही है। उन्होंने अपनी पत्नि पर बहुत ज़ुल्म किए थे, परन्तु अब अपने व्यवहारों से उनका बहुत दिल जीत लिया है। अब वह उन्हें सहयोग देती हैं। मैं इस उमर में उनका जो संग्राम है, उसके आगे झुकता हूँ।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – देव – धर्म – मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts